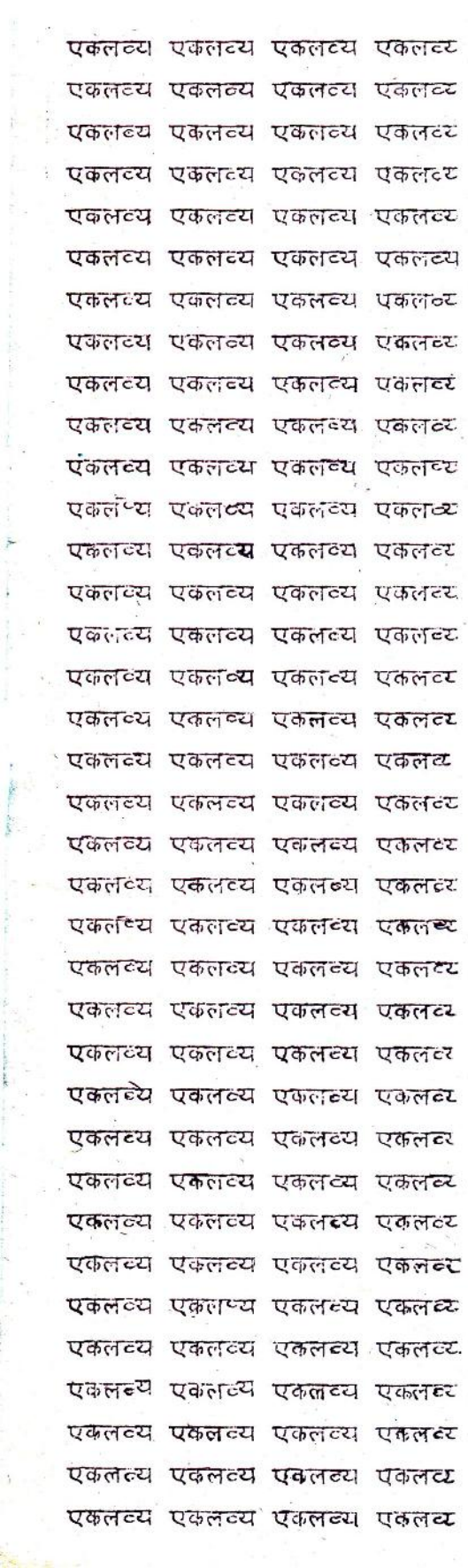

एकलव्य

शैक्षिक शोध
एवं
नवाचार संस्थान

मध्यप्रदेश

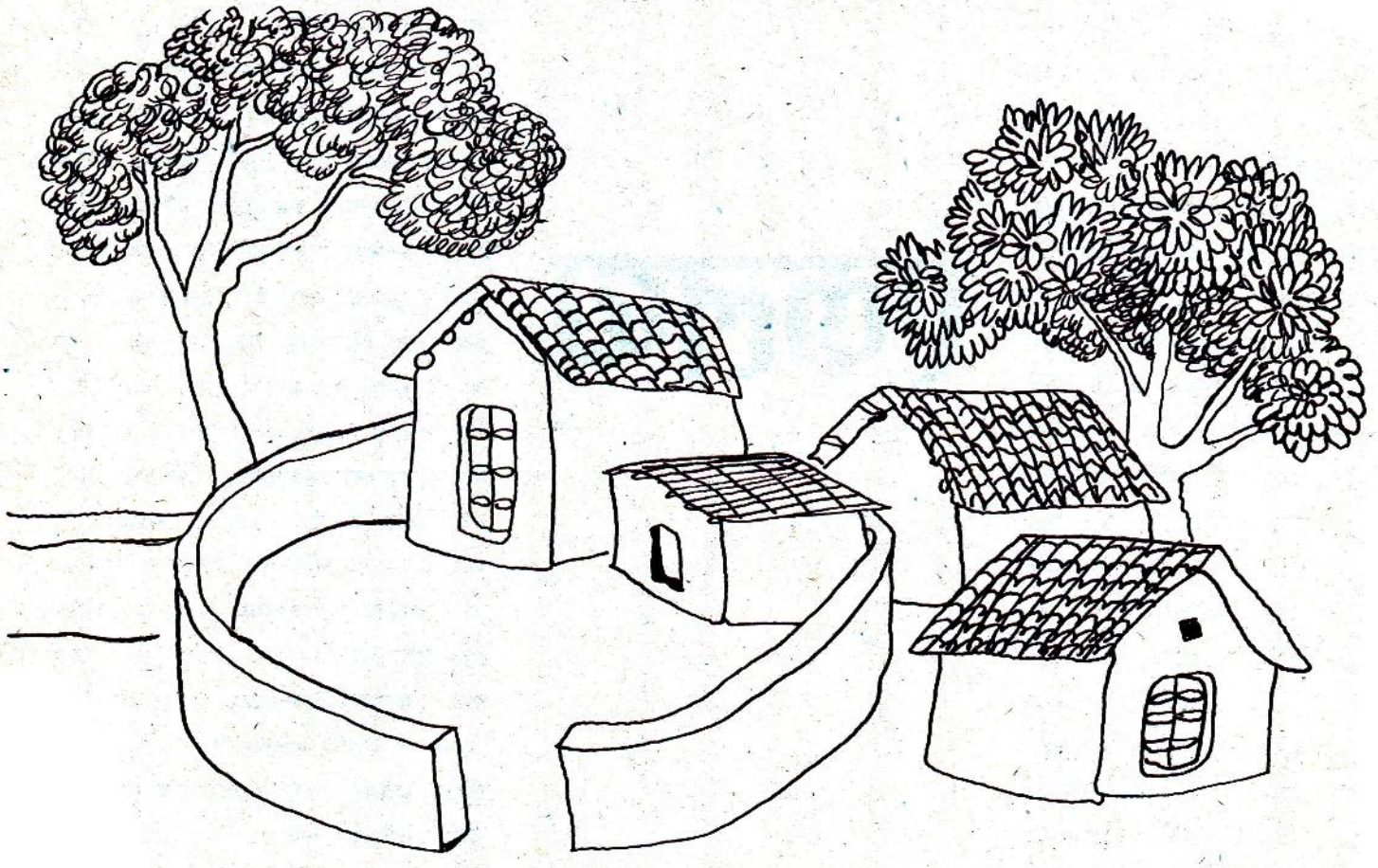

लीक से हटकर कोई भी काम करते ही आप एकदम से कटघरे में आ जाते हैं और शुरू हो जाता है सिलसिला शंकाओं और कुशंकाओं का ! मज़ेदार बात यह होती है कि आपको मालूम ही नहीं हो पाता कि आप चर्चा का विषय बने हुए हैं। कभी-कभार कहीं से भनक पड़ती है कि अमुक सज्जन यह कह रहे हैं, वह कह रहे हैं। लोगों के सवाल अक्सर इस तरह के होते हैं - यह संस्था क्या बला है ? कैसा है यह काम ? ये लोग कौन हैं ? इनकी हैसियत क्या है ? इनकी नौकरी कच्ची है या पक्की ? इससे इन्हें क्या और कितना लाभ है ? यदि नहीं है तो क्यों फालतू में झक मार रहे हैं ? इनकी संस्था का बॉस (प्रमुख) कौन है ? किसके अंडर में आते हैं ये लोग ? इन्हें पैसा कहाँ से मिलता है ? "अच्छा ? ग्रान्ट मिलती है ! तो जरूर तिकड़मी या प्रभावशाली लोग होंगे ! कौन है इनका गॉड फादर ?" और भी न जाने कितने अजीबो-गरीब सवाल होते हैं लोगों के। जब कभी किसी ने एकाध-दो सवाल पूछ लिए हमसे तो हमने बता दिया वरना यह गुणा भाग अक्सर लोगों के दिल-दिमाग में चलता रहता है ? न आपसे पूछेंगे और न आप उन्हें बतायेंगे। अक्सर लोग अंदाज लगाते हैं और जब बिना जानकारी के अंदाज लगाते हैं तब अक्सर होता है - जाकी रही भावना जैसी...।

हम कोशिश कर रहे हैं आपको 'एकलव्य' के बारे में कुछ बताने की। कैसे बनी यह संस्था, और आखिर बनी ही क्यों ? क्या करते हैं ? कैसे करते हैं ? कौन लोग हैं इसमें आदि-आदि।

मध्यप्रदेश में शैक्षिक शोध एवम् नवाचार संस्थान (एकलव्य) की स्थापना के प्रस्ताव पर विचार करने के लिए योजना आयोग ने 24 मार्च 1982 को एक बैठक बुलाई। योजना आयोग के सदस्य एवं अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के कृषि वैज्ञानिक डॉ० एम० एस० स्वामीनाथन की अध्यक्षता में हुई, इस बैठक में निम्नलिखित संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया :
शिक्षा मंत्रालय (भारत-शासन), विश्व विद्यालय अनुदान आयोग, भारतीय समाज शास्त्र अनुसंधान परिषद्, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (भारत शासन), राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, मध्यप्रदेश शासन तथा संस्था के प्रस्तावक सदस्य।

सभी सदस्यों ने होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि शैक्षिक शोध एवं नवाचार के प्रयासों को प्रोत्साहित कर उन्हें

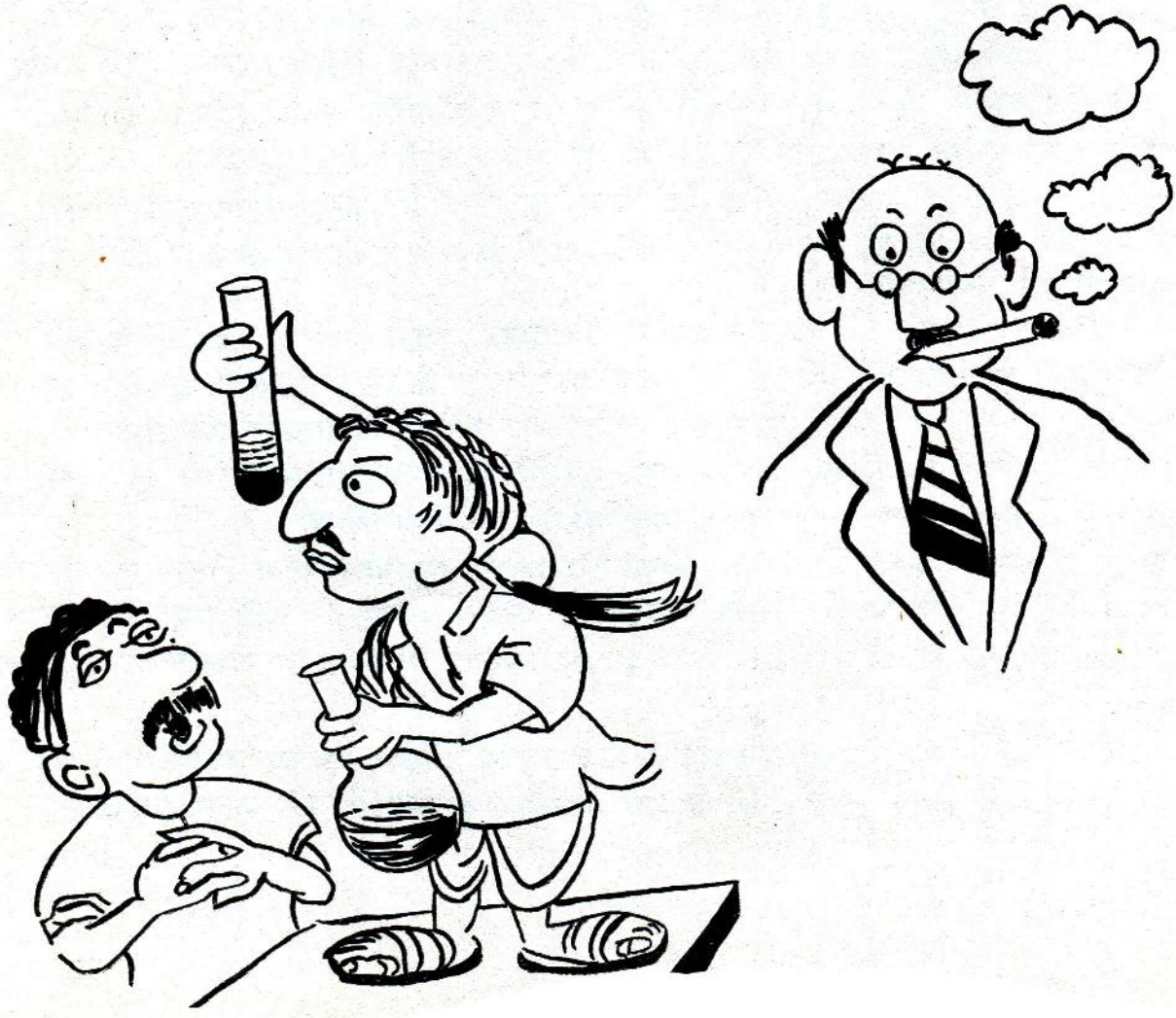

सहयोग देना चाहिए। चर्चा में यह बात स्पष्ट रूप से उभर कर आयी कि शिक्षा में नवाचारों को परखने और उन्हें फैलाने के लिए जिस वातावरण और पहल की जरूरत होती है, वह शासकीय तंत्र में संभव नहीं है। अतः आवश्यकता है ऐसे स्वैच्छिक प्रयासों की जो शासकीय तंत्र में अर्थपूर्ण पहल कर सकें। बैठक में उपस्थित सभी विभागों और संस्थानों ने शिक्षा में शोध और नवाचारों को छोटे स्तर पर परखकर व्यापक पैमाने पर फैलाने के लिए बनाये जा रहे इस संस्थान "एकलव्य" के विचार का स्वागत करते हुए अपनी-अपनी संस्थाओं का समर्थन व्यक्त किया। संस्थान के प्रस्ताव में दिए गए बजट का दो तिहाई भाग विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (भारत शासन) तथा एक तिहाई भाग मध्यप्रदेश शासन ने देना स्वीकार किया।

डॉ० स्वामीनाथन ने कहा कि शैक्षिक शोध एवं नवाचारों को प्रोत्साहित करने तथा इसके लिए स्वयंसेवी प्रयासों को समर्थन देने की बात चर्चा के दौरान स्पष्ट रूप से उभर कर आयी है। प्रस्तावित संस्थान की संरचना नवाचारों को विकसित करने में सहायक होगी। उन्होंने यह भी कहा कि इस अनुभव के आधार पर सातवीं पंचवर्षीय योजना को विकसित करते समय देश के अन्य भागों में भी इस तरह के संस्थानों की स्थापना पर विचार किया जा सकता है। इस प्रयास को पूर्ण समर्थन मिलना चाहिए एवं आशा की जानी चाहिए कि देश की शिक्षा-प्रणाली को अर्थपूर्ण बनाने में यह मील का पत्थर साबित होगा।

कौन लोग हैं "एकलव्य" में ?

शिक्षा को अधिक अर्थपूर्ण बनाने के काम में कई लोगों की रुचि है। ऐसे लोग जो विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों एवं अन्य संस्थाओं में कार्य करते हुए समय निकाल कर इस तरह के कार्यों में योगदान करते रहे हैं, अब 'एकलव्य' में पूरा समय इन कार्यों में लगा पा रहे हैं। तंत्र की जकड़न और लालफीताशाही से मुक्त स्वयं की पहल से काम कर सकने वाले लोगों को भी 'एकलव्य' में अवसर मिला है। 'एकलव्य' में आने से पहले जो लोग जिस वेतन पर काम कर रहे थे, उसी के समकक्ष वेतन में वे यहाँ कार्य कर रहे हैं। इस तरह के कार्यों में गहरी रुचि होने के कारण कई युवा साथियों ने सुरक्षित और स्थायी नौकरी करने के बजाय यह काम चुना। इन साथियों के लिए भी

वेतन की वही व्यवस्था की गयी जो उनके लिए महाविद्यालय या अन्य जगह हो सकती है। 'एकलव्य' में जो लोग हैं उनका परिचय और पृष्ठभूमि इस प्रकार है –

1. शरदचन्द्र बेहार	भारतीय प्रशासनिक सेवा में। पूर्व शिक्षा सचिव (म॰प्र॰ शासन) शिक्षा में गहरी रुचि। मूल निवास – सारंगगढ़ (म॰प्र॰)।
2. डॉ॰ हृदयकांत दीवान	किरोड़ीमल महाविद्यालय, दिल्ली में भौतिकशास्त्र का अध्यापन। होविशिका में गत 9 वर्षों से संलग्न। मूल निवास – दिल्ली। होशंगाबाद केन्द्र में कार्यरत।
3. डॉ॰ अरविंद गुप्ते	म॰प्र॰ के शासकीय महाविद्यालयों में प्राणिशास्त्र का अध्यापन। होविशिका में गत 9 वर्षों से संलग्न। मूल निवास – इन्दौर म॰प्र॰ उज्जैन केन्द्र में कार्यरत।
4. डॉ॰ मोहज़ रस्सीवाला	खगोल भौतिकी में – फ्रांस और अलजीरिया में – अध्यापन। युवा गतिविधियों में सक्रिय। टाटा इन्स्टीट्यूट आफ फण्डामेन्टल रिसर्च, बम्बई में कार्य। हिंदी, अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन भाषाओं का ज्ञान। मूल निवास – बम्बई। उज्जैन केन्द्र में कार्यरत।
5. डॉ॰ विनोद रायना	दिल्ली विश्वविद्यालय के कम्प्यूटर सेन्टर से सम्बद्ध तथा वहीं भौतिक शास्त्र का अध्यापन। होविशिका में गत 10 वर्षों से संलग्न। मूल निवास – काश्मीर। भोपाल केन्द्र में कार्यरत।
6. डॉ॰ भरत पूरे	शासकीय महाविद्यालयों में प्राणिशास्त्र का अध्यापन। होविशिका में गत 9 वर्षों से संलग्न। मूल निवास – पाड़ल्या (खरगोन)। धार केन्द्र में कार्यरत।
7. श्याम बोहरे	शासकीय महाविद्यालय खण्डवा में लोक प्रशासन का अध्यापन। नेहरू युवक केन्द्र, भारत शासन, होशंगाबाद में अनौपचारिक शिक्षा एवं युवा गतिविधियों का अनुभव। होविशिका में गत 7 वर्षों से संलग्न। मूल निवास – सागर (म॰प्र॰)। हरदा केन्द्र में कार्यरत।
8. रेक्स डी॰ रोजारियो	'साइंस टुडे' में संपादन। किशोर भारती बनखेड़ी में कार्य।

	दक्षिण भारत में एक पत्रिका का संपादन। मूल निवास - केरल भोपाल केन्द्र में कार्यरत।
9. डॉ० अनवर जाफरी	कम्प्यूटर साइंस में मास्को से पी-एच.डी.। मूल निवास अलीगढ़ (उ०प्र०)। इटारसी केन्द्र में कार्यरत।
10. डॉ० रामनारायण स्याग	इन्दौर विश्व विद्यालय के शिक्षा विभाग से पीएच०डी.। शिक्षा महाविद्यालय में अध्यापन। होविशिका में गत 7 वर्षों से संलग्न। मूलनिवास - अबोहर (हरियाणा)। पेवास केन्द्र में कार्यरत।
11. अंजली नरोन्हा	अर्थशास्त्र में एम०ए०। मूल निवास - भोपाल। इटारसी केन्द्र में कार्यरत।
12. विवेक पारस्कर	म०प्र० के शा०उ०मा० विद्यालयों में विज्ञान का अध्यापन। मूल निवास - उज्जैन (म०प्र०) उज्जैन केन्द्र में कार्यरत।
13. रश्मि पालीवाल	इतिहास में एम०ए०। मूल निवास - फरीदाबाद। होशंगाबाद केन्द्र में कार्यरत।
14. राजेश उत्साही	कवि एवं कथाकार। लेखन और संपादन में रुचि। समाजशास्त्र में एम०ए०। मूल निवास - होशंगाबाद (म०प्र०) होशंगाबाद केन्द्र में कार्यरत।
15. कमल महेन्दू	भौतिकशास्त्र में एम०एस-सी०। किशोर भारती बनखेड़ी में कार्य। होविशिका में गत 9 वर्षों से संलग्न। मूलनिवास - दिल्ली। पिपरिया केन्द्र में कार्यरत।
16. आर.के.भटनागर	शिक्षा विभाग, म०प्र० में वित्त अधिकारी (सेवा निवृत्त) मूल निवास - भोपाल (म०प्र०) भोपाल केन्द्र में कार्यरत।
17. अवध बिहारी खरे	शिक्षा विभाग म०प्र० में सहायक जिला शाला निरीक्षक। बुनियादी प्रशिक्षण संस्थान, नरसिंहपुर में अध्यापन। होविशिका से 1972 से सम्बद्ध। मूलनिवास - नरसिंहपुर म०प्र०। पिपरिया केन्द्र में कार्यरत।
18. सी.एन. सुब्रमण्यम	इतिहास में एम.फिल.। कृषि इतिहास में शोध। मूलनिवास - दिल्ली। होशंगाबाद केन्द्र में कार्यरत।

19. रविकांत मिश्र	बी.ए. । मूल निवास - धुनलपुर, इलाहाबाद (उ०प्र०) पिपरिया केन्द्र में कार्यरत ।
20. वीणा भाटिया	बी.ए., बी.एड. । पूर्व प्रधान अध्यापिका, आदर्श विद्या-मंदिर, भोपाल । मूल निवास- भोपाल । हरदा केन्द्र में कार्यरत ।
21. सुनील शर्मा	भौतिक शास्त्र में एम.एस-सी. । बी.एड. । दिल्ली की शालाओं में अध्यापन । मूल निवास - दिल्ली । धार केन्द्र में कार्यरत ।
22. कालूराम शर्मा	प्राणिशास्त्र में एम.एस-सी. । मूल निवास-धार म.प्र. धार केन्द्र में कार्यरत ।
23. कमल सिंह	नेहरू युवक केन्द्र, होशंगाबाद में कार्य का अनुभव। मूल निवास -जिला सागर । भोपाल केन्द्र में कार्यरत ।
24. एन.आर. मोहनदास	अंग्रेजी स्टेनो व टायपिस्ट । मूल निवास - केरल । भोपाल केन्द्र में कार्यरत ।
25. ब्रजेश्वा सिंह	बी.कॉम । हिन्दी टायपिंग उत्तीर्ण । मूल निवास - होशंगाबाद । होशंगाबाद केन्द्र में कार्यरत ।
26. महेश्वा शर्मा	बी.एस-सी. एल.एल.बी. । सामाजिक कार्य का अनुभव । मूल निवास -होशंगाबाद । होशंगाबाद केन्द्र में कार्यरत ।
27. जमा विवेक	मूर्तिकला में डिप्लोमा । चित्रकला में एम.ए. । ग्वालियर में कला अध्यापन । भारत भवन में कलाकृतियों के संकलन का कार्य । मूल निवास - ग्वालियर । भोपाल केन्द्र में कार्यरत ।
28. निशा व्यास	बी.एस.सी. । पत्रकारिता । लेखन । मूल निवास - रतलाम । भोपाल केन्द्र में कार्यरत

काम करने का ढंग

ताजी हवा आती रहे, लगातार नये विचारों का प्रवाह बना रहे, यह सोचकर ऐसा इंतजाम किया है कि स्थायी कार्यकर्ता कम हों और नये-नये लोग एक निश्चित समय के लिए आकर काम कर सकें। विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के शिक्षक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से फैलोशिप लेकर तीन वर्षों तक काम कर सकते हैं। मध्यप्रदेश के स्कूली शिक्षक भी निश्चित समय के लिए प्रतिनियुक्ति पर काम कर सकें, इसके लिए 20 शिक्षकों के लिए बजट में प्रावधान है।

'जो जहाँ है वहीं से मदद' इस सिद्धांत के तहत देश के कई भागों के लोग 'एकलव्य' के काम से जुड़े हैं, जो अपना काम करते हुए अपनी मर्जी

से समय समय पर काम की जररत के मुताबिक सहयोग देते हैं। कहने का मतलब यह है कि 'एकलव्य' के कार्यों में मदद करने के लिए यह कतई जरूरी नहीं है कि लोग अपना काम लम्बे समय के लिए छोड़ें। थोड़ा-बहुत जितना भी समय जो दे सके, उसका उपयोग हमारे लिए है, और वह कम महत्वपूर्ण नहीं है। शिक्षा में विकेन्द्रीकरण के पक्षधर होने के नाते 'एकलव्य' का ढाँचा शुरू से ही विकेन्द्रीकृत रखा गया है। प्रदेश के अलग-अलग क्षेत्रों में फील्ड सेन्टर बनाए गए हैं। सभी कार्यों के संयोजन के लिए भोपाल में एक सेन्टर है, जो सभी केन्द्रों से सम्बंधित प्रशासकीय और वित्तीय लेखा-जोखा रखता है। साथ ही विभिन्न शासकीय इकाइयों से संपर्क का काम करता है। दरअसल यह केन्द्र फील्ड सेन्टर्स को वित्तीय प्रक्रियाओं एवम् प्रशासकीय कार्यों से अधिक से अधिक मुक्त रखने के उद्देश्य से स्थापित किया गया है, जिससे फील्ड सेन्टर शैक्षिक कार्यों में अधिक समय लगा सकें।

फील्ड सेन्टर्स : स्थानीय परिवेश में रहकर उसके अनुकूल शैक्षिक सामग्री विकसित करना, नए-नए प्रयोग करना, नई शैक्षिक सामग्री और पद्धतियों को परखना, इन सभी प्रक्रियाओं में स्थानीय व्यक्तियों और स्रोतों का अधिक से अधिक उपयोग करना जिससे शिक्षा और उसमें होने वाले परिवर्तनों में स्थानीय भागीदारी के अवसर बढ़ा सकें। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए फील्ड सेन्टर्स स्वायत्त इकाई की तरह काम करते हैं।

हो.वि.शि.का. (होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम)

होशंगाबाद जिले के सभी मिडिल स्कूलों में चल रहे इस कार्यक्रम को निरंतर विकसित करते रहने तथा इसके शैक्षिक सलाहकार की जो भूमिका पहले किशोर भारती द्वारा निबाही जाती थी, वह जिम्मेदारी अब 'एकलव्य' ने सम्हाल ली है। इस कार्यक्रम में शिक्षकों का प्रशिक्षण, अनुवर्तन, शिक्षकों के साथ मासिक गोष्ठियाँ, निरंतर फीड बैक इकठ्ठा करते रहना, शिक्षक निर्देशिकाएँ तैयार करना, परीक्षा के प्रश्नपत्र तैयार करने तथा मूल्यांकन का समय-समय पर प्रशिक्षण एवं कार्यक्रम संचालन के कई पहलू शामिल हैं।

प्रशिक्षण, अनुवर्तन और निरंतर फीड बैक इकठ्ठा करते रहना इस कार्यक्रम के महत्वपूर्ण अंग हैं। प्रशिक्षण में पाठ्यक्रम को महज रस्म अदायगी

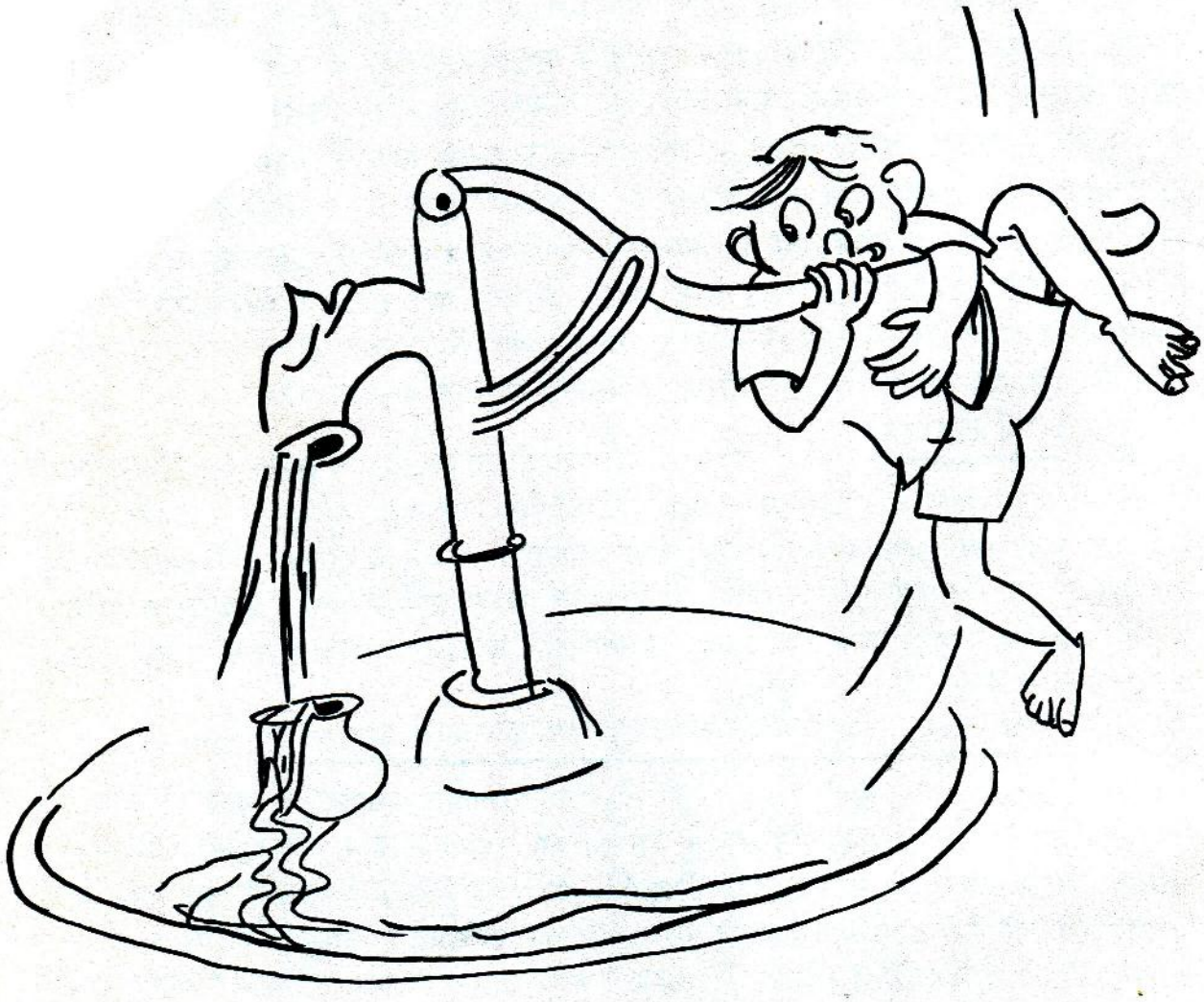

के लिए पूरा नहीं किया जाता वरन् पूरी कोशिश होती है कि सभी शैक्षिक गतिविधियों में शिक्षकों की अधिक से अधिक भागीदारी हो। खुली बहस, तार्किक चिंतन, निर्भीकता पूर्वक प्रश्न खड़े करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देकर शिक्षकों की छिपी हुई प्रतिभाओं को विकसित करने के प्रयास भी किए जाते हैं। इन्हीं प्रयत्नों के फलस्वरूप बहुत से शिक्षक स्रोत व्यक्तियों के रूप में उभर कर आए हैं।

अनुवर्तन के जरिये स्कूलों से जीवंत सम्बन्ध बनाए रखने का प्रयास होता है, जिसमें एक ओर शिक्षक को निरंतर शैक्षिक सहयोग मिलता है, दूसरी ओर कार्यक्रम के लिए फीडबैक मिलता रहता है जो कार्यक्रम के सभी पहलुओं को विकसित करने में सहायक होता है।

होशंगाबाद जिले के अतिरिक्त उज्जैन और देवास जिलों के एक-एक और धार जिले के दो शाला संगमों (स्कूल काम्प्लेक्स) में भी सत्र 1983-84 से यह कार्यक्रम चल रहा है। रतलाम, मंदसौर, शाजापुर जिलों में इस कार्यक्रम का विस्तार सत्र 1984-85 में किया गया है। झाबुआ, इंदौर एवं खरगौन जिलों के शाला संगमों में इस कार्यक्रम के परीक्षण का प्रस्ताव विचाराधीन है।

सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम :

हमारा मानना है कि इतिहास, भूगोल व नागरिक शास्त्र पढ़ने का अर्थ किसी समय, स्थान व संस्था के बारे में ढेर सारी जानकारी याद करना ही नहीं है। जानकारी के आधार में जो परिभाषाएँ हैं, अवधारणाएँ हैं, बोध चिन्ह - चीज़ों और स्थितियों को पहचानने व उनके बीच फर्क कर पाने के सूत्र - हैं, ये सामाजिक अध्ययन के स्तंभ हैं, नींव हैं। इसलिए यह महत्वपूर्ण नहीं कि बच्चे कितनी बातें ठीक-ठीक याद रख पाते हैं - अपितु महत्वपूर्ण यह है कि उनमें इतिहास, भूगोल व नागरिक शास्त्र की पद्धति का मूल दृष्टिकोण विकसित होता है या नहीं।

समाज को समझने की कोशिश को कृत्रिम व असम्बद्ध तरीके से इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र में विभाजित करना भी तर्कहीन लगता है। समाज के हर पहलू के बीच अभिन्न, अंतः सम्बन्ध होता है - अतः जरूरत है

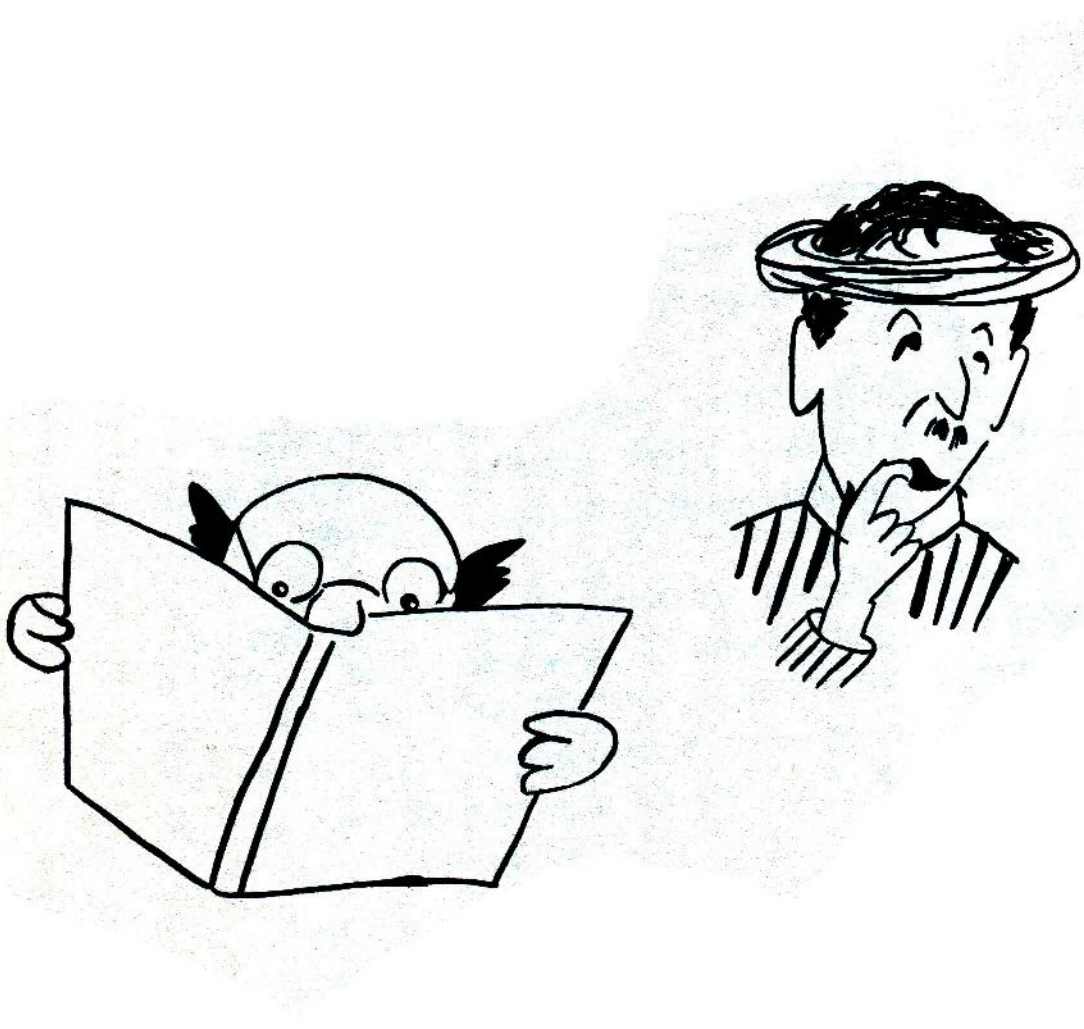

समग्रता के बोध को उभारने व निखारने की। हमारा विश्वास है कि पाठ्यक्रम के प्रति बच्चों के अलगाव व उदासीनता को दूर या कम किए बिना शिक्षा का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता। इसलिए सामाजिक अध्ययन पाठ्यक्रम की एक ऐसी कल्पना हमारे मन में है, जो बच्चों के पर्यावरण से जुड़कर उभरता हो, जिसमें बच्चों की भूमिका निष्क्रिय श्रोता की न होकर सक्रिय व संलग्न कर्त्ता की हो। सामाजिक अध्ययन का 'समाज' बच्चों के समाज से जुड़े क्योंकि बच्चे जब अपने अनुभवों व अवलोकनों के प्रति सजग व उत्सुक होने लगेंगे, तभी उनमें सामाजिक अध्ययन की अवधारणाओं व कुशलताओं के विकास को अंकुरित करना संभव होगा।

इन मान्यताओं और इस कल्पना को साकार करने का रास्ता ढूँढना है, बनाना है, उन सब के सहयोग व भागीदारी के साथ जो बच्चों की शिक्षा के साथ किसी न किसी तरह से जुड़े हुए हैं। हमारा यह विश्वास है कि इस प्रक्रिया से उभरा पाठ्यक्रम तब तक लागू करने योग्य नहीं बनेगा जब तक कि स्कूलों में लगातार परखने के बाद उसका औचित्य सिद्ध नहीं हो जाता।

भाषा कार्यक्रम :

मिडिल स्कूल के बच्चे हिन्दी समझने, पढ़ने और लिखने में बहुत कमजोर हैं, इस बात में शायद ही किसी को शक हो। किसी भी सीखी और समझी हुई बात को अपने शब्दों में लिखकर अभिव्यक्त करने में उन्हें बहुत कठिनाई होती है। ऐसी स्थिति में बच्चे विज्ञान, समाजशास्त्र या कोई भी विषय ठीक ढंग से भला कैसे सीख सकते हैं? हमारा प्रयास है कि वे प्राथमिक स्तर के बाद अपनी पाठ्य पुस्तकें, हिन्दी के अखबार, पत्रिकाएँ तथा और भी उपलब्ध सामग्री ठीक से पढ़ सकें, समझ सकें। भाषा हमारी सामाजिक, आर्थिक परिस्थिति, संस्कृति तथा हमारे परिवेश के अनुसार विकसित और अभिव्यक्त होती है। मध्यप्रदेश जैसे हिंदी भाषी प्रदेश में भी लोग अलग-अलग बोलियों का प्रयोग करते हैं, बल्कि कई जगह तो उनकी भाषा हिन्दी से काफी अलग होती है। अपनी बोली और किताबी भाषा में अंतर, भाषा सीखने की प्रक्रिया को कुंठित कर देता है। ऐसी स्थिति में बच्चे की परेशानी यह होती है कि जो घर में सही है, वह स्कूल में गलत और जो स्कूल में सही है वह घर में गलत।

इन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए एक प्रोजेक्ट तैयार किया

गया है जिसका उद्देश्य ऐसे तरीकों की खोज करना है, जिससे बच्चों को अपनी बोली से सामंजस्य स्थापित करते हुए किताबी हिन्दी का उपयोग सिखाया जा सके। हम ऐसा सोचते हैं कि बच्चों की किसी बात को समझने और आत्मसात करने की क्षमता को ध्यान में रखते हुए ही भाषा का पाठ्यक्रम विकसित हो। हमारा प्रयास होगा कि भाषा को एक विषय के रूप में नहीं वरन् सभी विषयों को समझने और अभिव्यक्त करने के माध्यम के रूप में विकसित किया जाए।

जन विज्ञान और विज्ञान का लोकव्यापीकरण :

विज्ञान का उपयोग जीवन में कई तरह से है। केवल प्रौद्योगिकी, विकास और जीवन को सुविधाएँ मुहैया कराने मात्र से ही नहीं, वरन् समाज के विकास को समझने और उस समझ के आधार पर आज की परिस्थिति का विश्लेषण करने में विज्ञान का तरीका सहायक होता है। विज्ञान के तरीकों के मूल में एक प्रमुख बात है, मनुष्य की जिज्ञासा।

समाज में बहुत सी मान्यताएँ और विश्वास प्रचलित हैं। कई मान्यताएँ अपर्याप्त जानकारी और विश्लेषण के आधार पर ही विकसित हो जाती हैं। विश्लेषण और सोच की तार्किक प्रक्रिया शुरू करना जन-विज्ञान का प्रमुख उद्देश्य है। मनुष्य की जिज्ञासा को उभारकर सवालों के उत्तर वैज्ञानिक ढंग से ढूँढना विज्ञान के लोकव्यापीकरण का सर्वोत्तम और महत्वपूर्ण अंग है।

यह काम विज्ञान मेलों, प्रदर्शनियों, नेचर क्लब, पत्रिका स्वयम् समय-समय पर अन्य प्रकाशन, पुस्तकालयों विचार मंचों के माध्यम से शुरू किया गया है। भविष्य में विज्ञान यात्राओं का भी विचार है। योजना यह है कि इन सभी कार्यक्रमों में लोग मात्र दर्शकों की तरह नहीं, वरन् सक्रिय भागीदार हों, जहाँ वे अपने आपको अभिव्यक्त करें।

प्रकाशन :

शिक्षकों, बच्चों तथा शिक्षा में रुचि रखने वालों के बीच संवाद कायम करने के लिए 'होशंगाबाद विज्ञान' नामक एक पत्रिका 'किशोर भारती' द्वारा शुरू की गयी थी। प्रारंभ में तो इसमें होविशिका के विभिन्न पहलुओं पर ही सामग्री होती थी, पर बाद में संवाद को अधिक व्यापक बनाने के लिए शिक्षा के अन्य पहलुओं पर सामग्री भी इसमें जोड़ी गयी।

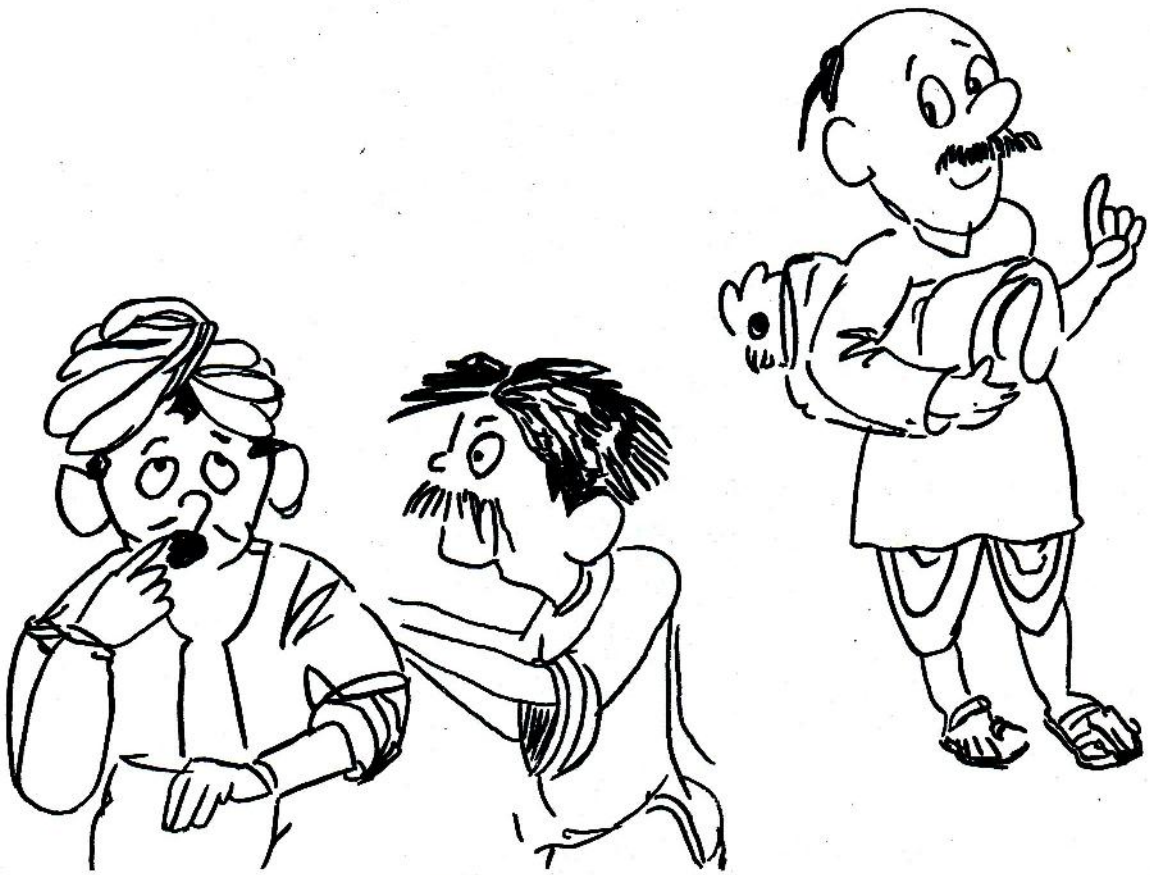

अब यह एकलव्य द्वारा प्रकाशित की जा रही है। लगातार संवाद और पाठक सर्वेक्षण से मिले अनुभवों के आधार पर यह निर्णय किया गया है कि बच्चों की सक्रियता, खोज करने की प्रवृत्ति रचनात्मक प्रतिभा विकसित करने के साथ-साथ उनमें वैज्ञानिक तरीकों के प्रति समझ, इतिहास-बोध तथा भाषा के विकास पर ध्यान देते हुए उन्हें स्कूल तथा स्कूल के बाहर अपने पर्यावरण के प्रति सजग व सक्रिय करने के प्रयास किए जायेंगे। इसके लिए बच्चों की पत्रिका 'चकमक' शुरू कर रहे हैं। 'चकमक' के अलावा 'होशंगाबाद विज्ञान' का प्रकाशन भी जारी रखेंगे पर 'होशंगाबाद विज्ञान' शिक्षकों और स्रोत व्यक्तियों के लिए होगी।

इन पत्रिकाओं के अलावा इतिहास बोध, इतिहास का तरीका और अपने आसपास के इतिहास की समझ विकसित करने के उद्देश्य से 'इतिहास क्या है?' तथा इसी प्रकार विज्ञान के तरीके को आसानी से समझाते हुए 'विज्ञान क्या है?' पुस्तिकाएँ भी छापी गयी हैं। भविष्य में इसी तरह की अन्य सामग्री भी तैयार करने का विचार है।

सपने सँजोना जितना सुखद होता है, उतना ही तकलीफ-देह होता है उनका बिखरना, टूटना और चूर-चूर हो जाना। आज की शिक्षा व्यवस्था और तंत्र की जो हालत है, जहाँ पर्याप्त संख्या में शिक्षक ही नहीं हैं, यदि शिक्षक हैं तो शाला भवन नहीं, शाला भवन हैं तो ब्लैक बोर्ड और चाकमिट्टी नहीं, और जहाँ यह सब है भी तो वह सामाजिक एवम् प्रशासनिक परिवेश नहीं, जहाँ स्वतंत्र-चिंतन, समता मूलक मूल्य, जिज्ञासा, स्वतंत्र अभिव्यक्ति व्यापक हिस्सेदारी की संभावनाएँ हों। ऐसे उदासीन एवम् जकड़न भरे माहौल में ताजी और निर्मल हवा का झोंका उसे प्रभावित करना तो दूर, क्या उसमें प्रवेश भी पा सकेगा? और यदि येनकेन प्रकारेण थोड़ी बहुत घुसपैठ कर भी ली तो वहाँ टिकेगा कितने दिन? यह जटिल प्रश्न हम सबके सामने है। फिर सवाल उठता है कि यह सब उठापटक आखिर क्यों?

हमें अनुभवों ने बताया है कि हालात इतने बदतर नहीं हैं कि कुछ किया ही न जा सके। बावजूद सभी सीमाओं के हाड़मास के पुतलों में अभी भी वह संवेदना बाकी है जो इस सर्वनाशी तंत्र को अस्वीकार करती है, परंतु विकल्प न होने से मजबूरी में इसे ढोती है। जहाँ कहीं तनिक

सा भी विकल्प और माहौल दिखता है, इसी तंत्र में फँसे लोगों की क्षमताएँ और परिवर्तन के लिए दृढ़ इच्छा शक्ति, विश्वास और निष्ठा के साथ उभरकर सामने आती हैं। और जब एक कदम उस दिशा में उठ जाता है तो दूसरे कदम के लिए जमीन भी तैयार होने लगती है। बदलाव के लिए लोगों में पिघी हुई प्रबल आकांक्षा, उनकी कार्यक्षमता और उसमें विकास की संभावनाएँ हमारा आधार हैं।

एकलव्य के क्षेत्रीय केन्द्रों के संपर्क पते :

होशंगाबाद	'एकलव्य', कोठीबाजार, होमगार्ड आफिस के पास पिपरिया रोड, होशंगाबाद (म०प्र०) 461001.
हरदा	'एकलव्य', नेहरू कॉलोनी, हरदा (म०प्र०)
पिपरिया	'एकलव्य', पचमढ़ी रोड, पिपरिया (म०प्र०)
उज्जैन	'एकलव्य', 293 विवेकानंद नगर कॉलोनी उज्जैन (म०प्र०)
धार	'एकलव्य', 17 एम०आई०जी० कॉलोनी माण्डू रोड, धार (म०प्र०) 454001.
देवास	'एकलव्य', माधव आश्रम, राधागंज, देवास (म०प्र०) 455001

योजना एवं समन्वय केन्द्र

ई-1/208 अरेरा कॉलोनी
भोपाल (म. प्र.)

नवम्बर 1984